रखरखाव

समय-समय पर अवांछित पौधो एवं खरपतवार को निदाई-गुड़ाई कर निकाल देना चाहिये।

सिंचाई

शुरूआती वर्षो मे समय-समय पर सिंचाई करना नितांत आवश्यक है।

खरपतवार प्रवंधन

जुलाई-अगस्त मे खरपतवार को निकाल देना चाहिये एवं प्रत्येक 2 से 3 माह मे लगातार खरपतवार निकालना आवश्यक है।

रोग प्रबंधन

रोगो एवं कीटो का प्रबंधन जैविक विधि द्वारा करना चाहिये।

विदोहन प्रबंधन

पौधारोपण के 10 वर्षो के उपरांत भिलवा फलो का उत्पादन प्राप्त होता है। भिलवा में जून-जुलाई मे पुष्पन एवं फलो का आना शुरू हो जाता है। फल नवम्वर-जनवरी तक परिपक्व होते है। भिलवा वृक्षो से 25-30 वर्षो तक आर्थिक लाभ लिया जा सकता है।

रासायनिक संगठन

भिलवा में वाईफ्लेवेनाइड्स, वाईफ्लेवेनोज A, C, A1 & A2 पाये जाते है। बीजो से प्राप्त तेल भिलावीनोल कहलाता है, जिसमे फिलोलिक संगठन होता है। केल्सियम आक्जेलेट के कण भिलवा के मध्यफल भित्ति के मृदऊत्तको से प्राप्त किये जाते है।

उत्पादन

25–45 कि. ग्रा. फल/ वृक्ष/ वर्ष प्राप्त होता है।

उपयोग

फल एवं तेलो मे औषधीय गुण विद्यमान होता हैं। फलो का परंपरागत उपयोग त्वचा रोगों में, अफारा एवं विकारनाशक के रूप मे किया जाता है। भिलवा का उपयोग हृदय संबंधी बीमारियो एवं केंसर के उपचार मे भी किया जाता है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्कः 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्सः 0761–2661304

ई–मेलः rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेबः http://www.rcfccentral.org

भिलवा

(*Semecarpus anacardium* Linn.F.)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019

भिलवा

(*Semecarpus anacardium* Linn.F.)

आयुर्वेदिक नाम	भल्लाटाका, अरूस्कर
हिन्दी नाम	भिलवा, भेला
यूनानी नाम	भिलावन, बालोदुर
अंग्रजी नाम	मार्किंग नट
व्यापारिक नाम	भिलवा, मार्किंग नट ट्री
वैज्ञानिक नाम	*Semecarpus anacardium*
उपयोगी भाग	फल

आकारिकीय लक्षण

भिलवा एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है, जिसकी ऊचाई 12-15 मी. एवं गोलाई 1.25 मी. तक होती है। इसका तना भूरे रंग का खुरदुरा होता है। पत्तियॉ साधारणतः लंबी, अंडाकार, दीर्घाकार 9.0 से 30.0 से.मी. लंबी एवं धुमावदार होती है।

पुष्पीय लक्षण

पुष्प छोटे, धूमिल, हरे-पीले रंग के एकलिंगीय होते है, जो दिसंबर - जनवरी माह में खिलते है। पुष्प पुष्पगुच्छो के रूप मे शिराओ पर निकलमे है। पुष्प 0.6–0.8 से.मी. व्यास के पुष्पगुच्छ डंठल सहित होते है। पुष्प पंखुड़ी युक्त लंबाकार हरित-श्वेत होती है । फल ड्रूप (गुठलीदार) प्रकार के, 2 से 2.5 से. मी. लंबे, तिरछे, अंडाकार, चिकने एवं चमकदार होते है, जो नारंगी रंग के आधार पर होते है,तथा पकने पर काले हो जाते है। ये वृक्ष पर फरवरी से जून तक रहते है।

वितरण

भिलवा का वितरण हिमालय के बाहरी क्षेत्र, सतलज से सिक्किम तक मुख्यतः भारत के उष्ण क्षेत्र एवं पूर्वी असम तक फैला हुआ है। भिलवा का अभी तक कृषिकरण नहीं किया गया है। सामान्यतः भिलवा के वृक्ष प्राकृतिक वनक्षेत्रो, मुख्यतः साल के साथ, पाये जाते है।

मृदा एवं जलवायु

भिलवा सामान्यतः भारत के उष्ण क्षेत्र में पाये जाता है। भिलवा के लिये अर्द्धशुष्क जलवायु तथा मध्यम बजरी मृदा जिसमे पानी निकासी की उत्तम व्यवस्था हो, वृक्षारोपण एवं पुरूत्पादन हेतु आदर्श मानी जाती है।

प्रवर्धन सामग्री

भिलवा का प्रवर्धन बीज के द्वारा आसानी से किया जा सकता है। बीज की जीवनक्षमता 6 माह तक ऑकी गई है।

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक

प्रवर्धन

सामान्यतः नए पौधो का प्रवर्धन नर्सरी तकनीक द्वारा मार्च-अप्रेल में किया जाता है। बीज से नए पौधो के उत्पादन हेतु सामान्यतः 30 दिन का समय लगता है। बीज से पुनरूत्पादित पौधे वर्षा ऋतु मे प्रत्यारोपित करना चाहिये। नवोद्भिद् पौधे कोहरे के प्रति संवेदनशील होते है हॉलाकि ये पुनः अपनी स्थिति मे शीघ्रता से आ जाते है। नवोद्भिद् अवस्था मे इनमे मुरझाना रोग होता है।

बीज उपचार

भिलवा के बीजो को एकांतर दिनो तक पानी मे डुबाकर गाय के गोबर के ऊपर सुखाकर बोने से बीज का अंकुरण 15 दिनो के अंदर आ जाता है। सांद्र H_2SO_4 के विलयन में बीजों को 5 मिनट तक डुबाकर अच्छी तरह प्रवाहित जल में धोने से भी बीज का अंकुरण 60-65 प्रतिशत तक प्राप्त किया जा सकता है।

कृषि क्षेत्र में वृक्षारोपण

भूमि तैयारी एवं खाद अनुप्रयोग

कृषि क्षेत्र में अच्छी तरह जुताई करके, मिट्टी को ऊपर नीचे कर महीन कणों मे परिवर्तित कर खरपतवार मुक्त कर देना चाहिये। तदुपरांत भूमि में प्रति हेक्टेयर 20 टन गोबर खाद मिलाकर भूमि तैयार करना चाहिये।

पौधा प्रत्यारोपण एवं उचित अंतराल

भिलवा के नवोद्भिद् पौधों को 60x60 से. मी. के अंतराल पर प्रत्यारोपित करना चाहिये। गड्ढे अप्रेल-मई माह मे तैयार कर लेने चाहिये जिससे पर्याप्त सूर्य की रोशनी मे मृदा के हानिकारक कीट नष्ट हो जाये।

प्रत्येक गड्ढे को मृदा एवं 15–20 कि.ग्रा. FYM से भर दिया जाता है। तदुपरांत पौधो का प्रत्यारोपण वर्षा ऋतु मे (जुलाई के माह) मे करना चाहिये। लगभग 277 नवोद्भिद् पौधे प्रति हेक्टेयर लगाये जाते है।

सहरोपण (इंटरक्रापिंग)

भिलवा के पौधौ के बीच मे अल्प समय मे उगने वाली फसल को भिलवा के साथ लगाया जा सकता है। इस तरह भिलवा के पौधारोपण के 2-3 वर्ष तक सहरोपण कर दूसरी अल्प अवधि की फसल भी ली जा सकती है।